अति अद्भुतम्=परम विस्मयकारी; **हरेः**=भगवान् श्रीकृष्ण के; **विस्मयः**=आश्चर्य होता है; **मे**=मुझे; **महान्**=महान्; **राजन्**=हे राजन्; **हृष्यामि**=हर्षित होता हूँ; **च**=तथा; **पुनः पुनः**=बारंबार।

अनुवाद

और हे राजन्! भगवान् श्रीकृष्ण के उस परम अद्भुत रूप को भी बारंबार स्मरण करके मुझे महान् आश्चर्य होता है और मैं पुनः-पुनः हर्षित हो रहा हूँ।।७७।।

तात्पर्य

प्रतीत होता है कि व्यासदेव की कृपा से संजय को भी श्रीकृष्ण के उस विश्वरूप का दर्शन हुआ, जो उन्होंने अर्जुन के समक्ष प्रकट किया था। निःसन्देह जैसा कहा गया है, श्रीकृष्ण ने ऐसा रूप इससे पूर्व कभी नहीं दिखाया था। इस समय भी उसका प्राकट्य केवल अर्जुन के लिए हुआ; परन्तु अर्जुन के साथ-साथ इने-गिने महाभागवतों को भी उसका साक्षात्कार हो सका। व्यासदेव इनमें से एक थे। वे परम भक्त और श्रीकृष्ण के शक्त्यावतार माने जाते हैं। व्यास ने यह सम्पूर्ण तत्त्व अपने शिष्य के प्रति प्रकाशित किया। अतः संजय अर्जुन के आगे प्रकट हुए श्रीकृष्ण के उस अद्भुत रूप का बारंबार स्मरण करता हुआ पुनः-पुनः हर्ष को प्राप्त हो रहा है।

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम।।७८।।

यत्र=जहाँ; **योगेश्वरः**=योग के परम ईश्वर; **कृष्णः**=श्रीकृष्ण (हैं); **यत्र**=जहाँ; **पार्थः**=अर्जुन है; **धनुर्धरः**=गाण्डीव धनुषधारी; **तत्र**=वहाँ (ही); **श्रीः**=राजलक्ष्मी आदि ऐश्वर्य; **विजयः**=उत्कर्ष; **भूतिः**=विलक्षण शक्ति; **ध्रुवा**=शाश्वत् (स्थिर); **नीतिः**=नीति (है); **मतिः मम**=ऐसा मेरा मत है।

अनुवाद

जहाँ योगेश्वर भगवान् श्रीकृष्ण है और जहाँ धनुषधारी अर्जुन है, वहीं शाश्वत राजलक्ष्मी, समस्त ऐश्वर्य, विजय, विलक्षण शक्ति और नीति है, ऐसा मेरा मत है।।७८।।

तात्पर्य

भगवद्गीता का उपक्रम धृतराष्ट्र की जिज्ञासा से हुआ था। उसे आशा थी कि उसके पुत्र युद्ध में विजयी होंगे, क्योंकि उन्हें भीष्म, द्रोण, कर्ण, आदि महारथियों का सहयोग प्राप्त था। अतः विजय स्वपक्ष की ही होगी, ऐसा उसका विश्वास था। किन्तु उसके लिए युद्धभूमि का चित्रांकन करके संजय ने कहा, "हे राजन! तुम अपनी विजय की सोच रहे हो, परन्तु मेरे मत में तो जहाँ श्रीकृष्ण-अर्जुन हैं, वहीं सम्पूर्ण श्री है।" उसने स्पष्ट कहा कि धृतराष्ट्र स्वपक्ष की विजय की आशा को त्याग दे। अर्जुन के पक्ष की विजय निश्चित थी, क्योंकि वहाँ साक्षात् भगवान् श्रीकृष्ण उपस्थित थे। श्रीकृष्ण द्वारा अर्जुन का सारथ्य करना भी एक ऐश्वर्य का ही प्रकाश था। भगवान्